ध्वनियों, पेड़ आदि के पारस्परिक संबंध तथा
उनके आकार - संबंधी केन्द्रीय विशेषताओं
के आधार पर उनका प्रत्यक्षीकरण पौधों के
(5) भिन्न पेड़ के रूप में होता है

प्रत्यक्षीकरण चयन की एक सक्रीय प्रक्रिया है
Perception is an active process of choice
व्यक्ति के सम्मुख वातावरण में एक ही साथ
कई उत्तेजनाएँ उपस्थित होती हैं लेकिन सभी
उत्तेजनाओं का प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है
व्यक्ति केवल उन्हीं वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण
करता है जो उसकी अवधान परिधि में
आती है। अन्य वस्तुएँ व्यक्ति के अवधान
परिधि के बाहर रहती हैं, इसलिए उनका
प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं होता। यहाँ प्रश्न
उठता है कि कौन सी वस्तु अवधान परिधि
अथवा अवधान केन्द्र तथा कौन अवधान
परिधि से बाहर रहती है। ये उस वस्तु या
उत्तेजना विशेष की कुछ विशेषताएँ, जैसे
तीव्रता (Intensity), नवीनता (Novelty),
पुनरावृत्ति (repetition) आदि एवं प्राणी
की व्यक्तिगत विशेषताएँ -
जैसे प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ
आदि पर निर्भर करता है। प्राणी का
व्यक्तिगत विशेषताओं का वातावरण
उपस्थित ~~वस्तुओं~~ वस्तुओं के चयन में
में महत्वपूर्ण स्थान होता है व्यक्ति अप

ज्ञान प्राप्त करने के कई तरीके हो सकते हैं जैसे किसी वस्तु के अनुपस्थिति में हम ज्ञान प्राप्त करते हैं तो उसे स्मृति कहा जाता है।

(3) प्रत्यक्षीकरण: एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है :— संवेदना की तरह प्रत्यक्षीकरण मात्र वह दर्पण नहीं है जिसके द्वारा हमें वातावरण में उपस्थित वस्तु का केवल आभास हो का परिलक्षित होता है। इसमें कुछ अन्य क्रियाएं भी होती हैं जिनके फलस्वरूप उस व्यक्ति का वाह्य प्राप्त संवेदी संकेतों और उसके स्वयं पूर्व अनुभवों को संगठित किया जाता है इस संगठन के परिणाम स्वरूप ही उत्तेजना के विभिन्न और सार्थक स्वरूप का अनुभव होता है किसी उत्तेजना के इस अनुभव में उत्तेजना क्षेत्र का हू-ब-हू प्रतिबिम्ब नहीं होता, बल्कि प्रत्यक्षीकरण से बुद्धि उसके विभिन्न अंगों के पारस्परिक संबंधों, वस्तु के विद्यमान केन्द्रीय या महत्वपूर्ण विशेषताएं आदि शामिल रहती है इन्हीं विशेषताओं के कारण दो वस्तुओं के प्रत्यक्षीकरण में अंतर होता है। उदाहरण के लिए, जब हम किसी पेड़ को देखते हैं तब इसके विभिन्न अंगों जैसे - पत्ते

ध्वनियों, पेड़ आदि के पारस्परिक सम्बंध तथा इनके आकार-संबंधी केन्द्रीय विशेषताओं के आधार पर ही व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण पौधों के भिन्न पेड़ के रूप में होता है।

(4) प्रत्यक्षीकरण चयन की एक सक्रिय प्रक्रिया है। Perception is an active process of choice. व्यक्ति के सम्मुख वातावरण में एक ही साथ कई उत्तेजनाएँ उपस्थित होती हैं लेकिन सभी उत्तेजनाओं का प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं है। व्यक्ति केवल उन्हीं वस्तुओं का प्रत्यक्षीकरण करता है जो उसके अवधान परिधि में आती हैं। अन्य वस्तुएँ व्यक्ति के अवधान परिधि के बाहर रहती हैं, इसलिए उनका प्रत्यक्षीकरण संभव नहीं होता। यहाँ प्रश्न उठता है कि कौन सी वस्तु अवधान परिधि अथवा अवधान केन्द्र तथा कौन अवधान परिधि से बाहर रहती है। उन वस्तु या उत्तेजना विशेष की कुछ विशेषताएँ, जैसे तीव्रता (Intensity), नवीनता (Novelty), पुनरावृत्ति (repetition) आदि एवं प्राणी की व्यक्तिगत ~~विशे~~ विशेषताएँ जैसे प्रेरणाएँ, इच्छाएँ, आवश्यकताएँ आदि पर निर्भर करता है। प्राणी का व्यक्तिगत विशेषताओं का वातावरण में उपस्थित ~~वस्तुओं~~ वस्तुओं के चयन करने में महत्वपूर्ण स्थान होता है। व्यक्ति अपने

प्रणालि इच्छा या आवश्यकतानुसार वातावरण में
उपस्थित वस्तुओं का चयन करता है
कारण प्रत्यक्षीकरण है इसी विशेषता के
प्रक्रिया कहते हैं। को चयनात्मक आ...

(5)

प्रत्यक्षीकरण के ग्राहक एवं स्नायु संबंधी जटिल क्रियाएँ अन्तर्निहित रहती हैं- प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना का उपस्थित होना अनिवार्य है। वातावरण में उपस्थित उत्तेजनाएँ हमारी ज्ञानेन्द्रियों के सम्पर्क में आती है जिसके परिणाम स्वरूप ग्राहक तंत्र कार्यशील होता है। इन तंत्र के कार्यशील होने के फलस्वरूप स्नायुप्रवाह बनते हैं जो ज्ञानवाही तंतुओं द्वारा मस्तिष्क के संवेदी क्षेत्र में पहुँचते हैं और इस प्रकार उपस्थित उत्तेजना की संवेदना होती है इसके बाद मस्तिष्क में उत्तेजना से संबंधित पूर्व अनुभवों के संकेत जागृत होते हैं। मस्तिष्क के साहचर्य क्षेत्र उपस्थित उत्तेजना से प्राप्त संवेदी विवरणों एवं पूर्व अनुभवों के संचित संकेतों को संगठित कर निश्चित अर्थ प्रदान करते हैं। जिससे उत्तेजना वास्तविक रूप में परिणत हो जाती है जिसे प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।

(6) प्रत्यक्षीकरण उत्तेजना का संगठन है:— (Perception is an organisation of stimulus):— वातावरण की जिन उत्तेजनाओं का हमें प्रत्यक्षीकरण होता है, वे सब विशेष प्रकार से व्यवस्थित एवं संगठित रहती है जब हम किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तब उस वस्तु या व्यक्ति के विभिन्न अवयवों की विशेषताओं का अलग-अलग प्रत्यक्षीकरण न करके उस वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण सम्पूर्ण रूप से एक संगठित इकाई के रूप में करते हैं। अतः प्रत्यक्षीकरण उत्तेजना का संगठन है।

(7) प्रत्यक्षीकरण में स्थिरता (Consistancy) के लक्षण पाए जाते हैं:— उत्तेजना के परिस्थिति में परिवर्तन होने पर भी यह देखा जाता है कि उसका प्रत्यक्षीकरण प्रायः अपरिवर्तित रहता है उदाहरण के लिए जब किसी टेबुल को निकट से देखते हैं तो टेबुल के किनारों का प्रतिबिंब रेटिना पर पड़ता है और वह आयताकार मालूम होता है और वही टेबुल कुछ दूरी से देखा जाता है तो तब उसके आगे के दोनों किनारे का ही प्रतिबिंब बनता है यह प्रतिबिंब कुछ नाव देखा जैसी होती है लेकिन उसका प्रत्यक्षीकरण